शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
निबंधमाला – गद्य खण्ड
शीर्षक – 'सिद्धि और प्रसिद्धि'
लेखक – किशोर जी
लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न :– साहित्य में किस तत्व का विशेष महत्व है?

उत्तर :– साहित्य में दर्शन का विशेष महत्व है। यह दर्शन ही उसका मेरुदण्ड होता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि यह दर्शन रचना में तिल-तण्डुल की तरह मिला हो। बल्कि इसे उसमें इस तरह आना चाहिए जैसे दूध में मिश्री घुली हुई हो।

साहित्य के लिए अनुभूति की सच्चाई एवं आदर्श का निर्वहन ये भी आवश्यक तत्व है। अनुभूति की अकृत्रिमता से जहाँ साहित्य को सिद्धि मिलती है, वहीं आदर्श की स्थापना से उसकी प्रसिद्धि स्थापित होती है। हाँ यह सही है कि कोरे आदर्श के लिए साहित्य नहीं लिखा जा सकता। इसलिए लेखक के अनुसार आदर्श की अप्रत्यक्ष योजना बहुत बड़ी कला है।

प्रश्न :– साहित्यकार को प्रसिद्धि कब मिलती है?

उत्तर :– लेखक किशोर जी के कथनानुसार साहित्यकार को प्रसिद्धि कब मिलती है इसमें परस्पर विरोधी मत है। अधिकांश विद्वानों का कहना है कि यह मृत्यु के बाद प्राप्त होती है। यथा जॉनसन और मिल्टन यही कहते हैं। परन्तु लेखक का विचार इससे भिन्न है। कवि सम्राट रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनके जीवन काल में प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। भवभूति जैसे लोग अनन्त काल तक इसकी प्रतीक्षा करते हैं।

अतः किशोर जी भावी साहित्य का स्वरूप स्थिर करते हुए स्वयं लेखकों को साधारणीकृत होने का संदेश देते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ज० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
29/09/20

शास्त्री ...

'निर्मला' उपन्यास
लेखक – मुंशी प्रेमचन्द

Date: ________ Page: ______

प्रश्न :- यथार्थवाद एवं आदर्शवाद के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण कैसा था, स्पष्ट करें।

उत्तर :- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द प्रगतिशील उपन्यासकार हैं। उन्होंने शोषित, पीड़ित और दलितों की हिमायत की है। उनका उद्देश्य शोषणहीन समाज का स्थापना करना है। मार्क्स जिस कार्य क्रान्ति द्वारा करना चाहते थे, वहीं प्रेमचन्द समाज को विकसित करके उसमें समझ पैदा करना चाहते थे। प्रगतिवादी साहित्य यथार्थवादी कहा जाता है किन्तु उसका मूल उद्देश्य वर्तमान जीवन की विषमताओं का उन्मूलन कर एक ऐसे आदर्श समाज की स्थापना करना है जहाँ मानव सुखी और सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सके। यही प्रेमचन्द का दृष्टिकोण है। प्रेमचन्द मूलतः यथार्थवादी रहे हैं, किन्तु गाँधीवादी युग के प्रभाव से वे आदर्शवाद को नहीं छोड़ पाए हैं। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने उन्हें आदर्शवादी सिद्ध करते हैं और हंसराज रहबर उन्हें यथार्थवादी मानते हैं, प्रेमचन्द स्वयं को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी घोषित करते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में यथार्थवाद और आदर्शवाद को समन्वित रूप रखा है। वहाँ कल्पना की ऊँची उड़ान नहीं है और न ही अस्वाभाविक पात्र और घटनाएँ हैं। उनका आदर्श यह था कि संसार से अन्याय, अत्याचार, पाखण्ड, असमानता आदि समाप्त हों और मानव समाज सुखी बने।

प्रेमचन्द कृत 'निर्मला' उपन्यास का रचनाकाल सन् 1923ई० तथा प्रकाशन काल सन् 1927 है। तत्कालीन समाज में दहेज-प्रथा कितनी विनाशक थी, इसका चित्रण तथा दहेज के अभाव में उससे उत्पन्न समस्याओं एवं परिणामों का हृदयविदारक यथार्थ चित्रण 'निर्मला' उपन्यास में किया गया है। वस्तुतः 'निर्मला' अनमेल विवाह तथा दहेज प्रथा की दुःखान्त कहानी है।

इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में आदर्शवादी विचार-धाराएँ भी रखी गयी है। अनमेल विवाह से ~~[illegible]~~ असंतुष्ट होने पर भी निर्मला अपने अधेड़ उम्र के पति तोताराम से कर्तव्य वश ही प्रेम करने लग जाती है। उसका यह सोचना

शेष आगे –

कि उसे अपने पति को पत्नी सुख से वंचित रखने का कोई अधिकार नहीं है। आदर्शवादी मानसिकता को ही दर्शाता है। सौतेली माता के रूप में निर्मला का चरित्र आदर्शवादी है। निर्मला के सम्पूर्ण चरित्र में उपन्यासकार ने आदर्शवादी विचारधारा का सामंजस्य किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं मुंशी प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकार हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 28|09|20
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

कि उसे अपने पति को पत्नी सुख से वंचित रखने का कोई अधिकार नहीं है। आदर्शवादी मानसिकता को ही दर्शाता है। सौतेली माता के रूप में निर्मला का चरित्र आदर्शवादी है। निर्मला के सम्पूर्ण चरित्र में उपन्यासकार ने आदर्शवादी विचारधारा का सामंजस्य किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं मुंशी प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकार हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 28|09|20
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

भाग-2 - पद्य खण्ड
शीर्षक - 'छप्पय' , कवि नाभादास

Date ______ Page ______

प्रश्न :- 'छप्पय' शीर्षक पदों का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- भक्तकवि नाभादास का यह छप्पय छन्द उनकी प्रसिद्ध रचना भक्तमाल से संकलित की गई है। ~~छप्पय~~ छप्पय शीर्षक पद कबीरदास एवं सूरदास पर लिखे गये हैं। छप्पय एक छन्द है, जो छः पंक्तियों का गेय पद होता है। यह छप्पय छन्द नाभादास की सारग्राही चिंतन के उदाहरण हैं।

प्रस्तुत छप्पय में वैष्णव भक्ति की नितांत भिन्न शाखाओं के इन महान भक्त कवियों पर लिखे गये छन्द हैं। इसमें इन कवियों से संबंधित अब तक के सम्पूर्ण अध्ययन-विवेचन के सार-सूत्र स्पष्ट अंकित हैं। इन पंक्तियों में कवि की दूर-दृष्टि दिखायी पड़ती है।

पाठ के प्रथम छप्पय में नाभादास ने आलोचनात्मक शैली में कबीर के प्रति अपने भाव व्यक्त किये हैं।

कवि के अनुसार कबीर ने भक्ति विमुख तथाकथित धर्मों की धज्जी उड़ा दी है। उन्होंने वास्तविक धर्म को स्पष्ट करते हुए योग, यज्ञ, व्रत, दान और भजन के महत्व का बार-बार प्रतिपादन किया है। उन्होंने अपनी सबदी, साखियों और रमैनी में क्या हिन्दू और क्या तुर्क सबके प्रति आदर का भाव व्यक्त किया है। कबीर के वचनों में पक्षपात नहीं है। उनमें लोक मंगल की भावना है। संत कबीर मुँह देखी बात नहीं करते हैं। उन्होंने वर्णाश्रम के पोषक षट्-दर्शनों की दुर्बलताओं को तार-तार करके दिखा दिया है।

दूसरे छप्पय में कवि नाभादास ने सूरदासजी का कृष्ण के प्रति भक्तिभाव प्रकट किया है। कवि का कहना है कि सूर की कविता सुनकर कौन ऐसा कवि है जो उनके साथ हामी नहीं भरेगा। सूरदास की कविता में श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन है। उनके जन्म से लेकर स्वर्गधाम तक की लीलाओं का मुक्त गुणगान किया है। सूरदास की कविता में गुण-माधुरी और रूप-माधुरी सब कुछ भरी हुई है। सूरदास की दृष्टि दिव्य थी। वही दिव्यता उनकी कविताओं में भी प्रतिबिंबित है। गोप-गोपियों के संवाद में अद्भुत

शेष आगे -

एल० प्रा० हिन्दी 28|09|20
रा०प्र०सिं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ

Date: ______ Page: ______

प्रीति का निर्वाह दिखायी पड़ता है। शिल्प की दृष्टि
वैचित्र्य और अनुप्रासों की अनुपम छटा सर्वत्र दि
है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरकसेना, पूर्णियाँ

28|09|20